**International Journal of Hindi Research**
**ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22**
**Received: 09-08-2020; Accepted: 24-08-2020; Published: 10-09-2020**
**www.hindijournal.com**
**Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 14-15**

# प्रभा खेतान के उपन्यासों में स्त्री का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

**हिटलर सिंह**
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, लंका महाविद्यालय, लंका, नगांव, असम, भारत

**प्रस्तावना**

20वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में प्रभा खेतान हिन्दी के उन महिला उपन्यासकारों में प्रमुख हैं, जिन्होंने अपने उपन्यासों में नारी–मनोभावों का विश्लेषण करना अपना लक्ष्य समझा। उन्होंने सामाजिक रीति-रिवाजों और पारिवारिक बंधनों में जकड़ी स्त्रियों के टूटते मानसिक स्तर का स्वतंत्र चित्रण किया है। जिस प्रकार एक लंबे अरसे से दबे हुए रहने के कारण किसी कौम और जाति में आत्मग्रस्तता, हीनताबोध, दब्बूपन, मानसिक निष्क्रियता, शंका, ईर्ष्या आदि गुण परिस्थितिवश आ जाते हैं वैसी ही स्थिति महिलाओं की हो गई थी लेकिन पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने इसे स्त्रियों का अलंकार बना दिया था। पितृसत्तात्मक व्यवस्था को चुनौती देते हुए इन लेखिकाओं ने स्त्री की दमित इच्छाओं, आकांक्षाओं एवं अनुभूतियों को खुलकर अभिव्यक्त किया है। इन्होंने स्त्री के हमेशा से व्यक्तिगत रहे दुख, उत्पीड़न, एवं दमन को सामाजिक कर दिया। इन उपन्यासकारों में प्रमुख है– कृष्णा सोबती, मैत्रेयी पुष्पा, मृदुला गर्ग, मेहरुन्निसा परवेज, कंचनबाला सब्बरवाल, मालती जोशी, नासिरा शर्मा, ममता कालिया, उषा प्रियम्वदा, प्रभा खेतान इत्यादि।

प्रभा खेतान ने यह अनुभव किया कि सिर्फ कविता के द्वारा वह अपने मन की बात दूसरों तक नहीं पहुँचा सकती। इसके लिए उन्होंने उपन्यास विधा को अपनाया | उन्होंने कुल आठ उपन्यास लिखे– आओ पेपे घर चले (1990 ई.), तालाबंदी (1991 ई.), अग्निसंभवा (1993 ई.), छिन्नमस्ता (1993 ई.), एड्स (1994 ई.), अपने-अपने चेहरे (1996 ई.), पीली आँधी (1997 ई.) और स्त्री पक्ष (1999 ई.)- इनमें से तीन उपन्यास विदेशी संस्कृति पर आधारित हैं, जिसकी पृष्ठभूमि भारतीय है और बाकी उपन्यासों में भारतीय मारवाड़ी स्त्री की दयनीय स्थिति को दर्शाया है। उनके उपन्यासों के केंद्र में स्त्री की व्यथा-कथा है। अपने उपन्यासों में प्रभा खेतान ने पहली बार वैश्विक धरातल पर बदलते हुए युग-बोध के साथ मारवाड़ी और विदेशी स्त्री की समस्याओं को अपने उपन्यासों का मुख्य विषय बनाया है। उन्होंने अपनी सहज शैली में 'स्त्री' के विविध स्वरूपों द्वारा स्त्री विमर्श के विभिन्न प्रश्नों का यथार्थ चित्रण अपने उपन्यासों में किया है। वह स्त्री की स्वतंत्रता की प्रबल समर्थक रही है और चाहती है कि समाज की रूढ़ मान्यताओं के विरुद्ध संघर्ष करते हुए भारतीय स्त्री और विदेशी स्त्री आत्मसम्मान एवं स्वाभिमान का जीवन व्यतीत करें। अरविंद जैन कहते हैं– "शायद यह पहली बार हिन्दी उपन्यास की नायिका परिवार, पूंजी और परंपरा की चोखट लांघकर देश-विदेश सभी सीमाओं के उस पार तक स्त्री के पक्ष में वकालत के साथ-साथ एक खतरनाक बौद्धिक विमर्श का जोखिम भी उठाती है।" 1

प्रभा खेतान के उपन्यासों की यह एक महत्त्वपूर्ण विशेषता रही है कि उन्होंने पुरुष प्रधान समाज में नारी की भयावह स्थिति का यथार्थ चित्रण ही नहीं किया बल्कि उनके मनोवैज्ञानिक कारणों एवं उनके प्रभावों का वास्तविक स्वरूप भी हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है। उनके उपन्यासों में बाल मनोविज्ञान और स्त्री मनोविज्ञान की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। उन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्री मनोविज्ञान का अति सूक्ष्म अध्ययन करते हुए आज की नारी की हर समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया है।

मनोविज्ञान वह अध्ययन प्रक्रिया है, जिसके आधार पर मन की गतिविधियों को कार्य-कारण क्रम में बाँधने का प्रयास किया जाता है। 'मनोविज्ञान' शब्द अँग्रेजी के 'Psychology' शब्द का अनुवाद है। यह शब्द 'Psyche' और 'logos' के योग से बना है। Psyche का अर्थ है 'आत्मा' और Logos का अर्थ है 'विकास करना'। इस प्रकार 'Psychology' का अर्थ है आत्मा का अध्ययन अथवा आत्मा संबंधी विचार।

द न्यू एनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटानिका के अनुसार– "Psychology is a Scientific discipline that studies mental processes and behaviour in humans and other animals" 2 अर्थात् साइकॉलोजी एक अकादेमिक और प्रयुक्त अनुशासन है जिसमें मानव और अन्य जीवों के मानसिक कार्यों और व्यवहारों का वैज्ञानिक अध्ययन शामिल है।

ऑक्सफोर्ड इंगलिश डिक्शनरी के अनुसार– "Psychology is the science of nature, function and phenomena of the human soul and mind." 3 अर्थात् मानव की आत्मा अथवा मन की प्रकृति, प्रकार्यों एवं परिदृश्यों का विज्ञान मनोविज्ञान है।

इस प्रकार मनोविज्ञान (Psychology) वह शैक्षिक व अनुप्रयोगात्मक विद्या है जो प्राणी (मनुष्य, पशु आदि) की मानसिक प्रक्रियाओं, अनुभवों तथा व्यवहारों का वैज्ञानिक अध्ययन करता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जो प्राणी के भीतर के मानसिक एवं दैहिक प्रक्रियाओं, जैसे– चिंतन, भाव आदि का वातावरण की घटनाओं के साथ संबंध जोड़कर अध्ययन करता है। इस परिप्रेक्ष्य में मनोविज्ञान को व्यवहार एवं मानसिक प्रक्रियाओं के अध्ययन का विज्ञान कहा गया है। मनोविज्ञान अनुभव का विज्ञान है, जिसका उद्देश्य चेतनावस्था की प्रक्रिया के तत्त्वों का विश्लेषण, उनके परस्पर सम्बन्धों का स्वरूप तथा उन्हें निर्धारित करने वाले नियमों का पता लगाना है।

प्रभा खेतान सार्त्र के अस्तित्ववादी दर्शन, अल्बेयर कामू, सिमोन द बोउवार की विचारधाराओं से अत्यंत प्रभावित थी। उन्होंने सन् 1991 ई॰ में सिमोन द बोउवार की विश्वविख्यात कृति 'द सेकंड सेक्स' का हिन्दी अनुवाद 'स्त्री उपेक्षिता' के नाम से किया। इस पुस्तक में सिमोन ने बचपन से बुढ़ापे तक की स्त्री की मानसिकता को व्याख्यायित करने का प्रयास किया है। उपर्युक्त इन विचारकों एवं दार्शनिकों का प्रभा खेतान के जीवन एवं साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ा है। वह कहती है कि जन्म के आरंभ से ही स्त्री का जीवन शोषण और संघर्षों के बीच घिरा रहता है। एक मानवीय इकाई के रूप में सभ्यता के सर्वांगीण विकास में स्त्रियों की भागीदारी हमेशा से महत्त्वपूर्ण रही है। परिवार और समाज में सहभागिता के अतिरिक्त वह निर्विवाद रूप से पुरुषों के आकर्षण का केंद्र भी रही है। परंतु समाज द्वारा सदैव उसके अस्तित्व को नकारा गया है। वह जीवन में सबकुछ समर्पण करके भी अपने आपको अकेली एवं असहाय ही पाती है, बस साथ रहता है तो सिर्फ एक मानसिक द्वंद्व। स्त्री के प्रति समाज द्वारा किए गए इन्हीं मनोवैज्ञानिक व्यवहारों की स्पष्ट व्याख्या प्रस्तुत करते हैं प्रभा खेतान के उपन्यास।

पितृसत्तात्मक समाज में सदियों से नारी का शोषण होता आ रहा है। शारीरिक यातना से अधिक उन्हें मानसिक यातना प्राप्त हुई है। प्रत्यक्ष हो या अप्रत्यक्ष रूप से शोषण के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक सभी कारकों का प्रभाव उनके मनोजगत पर पड़ता है। उनके प्रति किए गए असंवेदनशील व्यवहारों से उनका मानव-मन दहल उठता है। अपने उपन्यासों में प्रभा खेतान ने स्त्री जीवन के विविध आयामों द्वारा वर्तमान युग के मानव-व्यक्तित्व की निराशाओं तथा कठिनाइयों को व्यक्त

करते हुए स्त्री-मनोविज्ञान की उपयोगिता स्थापित करने का एक सार्थक प्रयास किया है। उनके उपन्यासों के नारी पात्रों के नाम अलग-अलग हैं, लेकिन उनकी मानसिक स्थिति एक जैसी है। चाहे वह 'छिन्नमस्ता' की प्रिया हो, 'आओ पेपे घर चले' की आइलीन हो, 'स्त्री पक्ष' की वृन्दा हो, 'अपने अपने चेहरे' की रमा हो, 'अग्निसंभवा' की आई.वी. हो। इन सभी नारी पात्रों में जो समान–समान मानसिक क्रियाएँ देखने को मिलती हैं, वे हैं- अंतर्द्वंद्व, अकेलापन, दमन, कुंठा, हताशा अथवा नैराशय, हीनता ग्रंथि, तनाव, अपराध-बोध की भावना, सम्बन्धों में अलगाव बोध, ईगो अथवा अहं इत्यादि।

प्रभा खेतान कृत 'छिन्नमस्ता' हमारे समाज की उस चीखती सच्चाई की कहानी है जिसे हम सुनकर भी सुनना और समझना नहीं चाहते। इस उपन्यास में 'प्रिया' नामक एक ऐसी लड़की की कहानी है जो जन्म से उपेक्षिता और निरंतर उत्पीड़ित रही है– समाज की जर्जर मान्यताओं से भी और पुरुष की आदिम शारीरिक भूख से भी। एक सम्पन्न मारवाड़ी परिवार में पाँचवी लड़की के रूप में जन्म लेने वाली प्रिया अपनी माँ के उपेक्षित व्यवहार से दुखी होकर एक दिन दाई माँ से पूछ बैठती है "अम्मा क्या मेरी अपनी माँ है या मैं तुम्हारे पेट से पैदा हुई हूँ?" 4

परिवार में अपने लोगों द्वारा की गई ही उपेक्षा, घर में बड़े भाई एवं महाविद्यालय में अध्यापक द्वारा यौन-शोषण तथा ससुराल में अपने पति नरेंद्र से मिले कटु अनुभवों के कारण प्रिया के मन में सदैव अंतर्द्वंद्व की स्थिति बनी रही। प्रिया समाज द्वारा स्त्री के लिए बनाए गए पारंपरिक चौखटे का अतिक्रमण करती हुई प्रेम, समर्पण, ईमानदारी, भरोसा आदि शब्दों के चक्रव्यूह से निकलकर व्यवसाय का मार्ग प्रशस्त करना चाहती है और अपनी एक नई पहचान बनाने का प्रयास करती है। परंतु परिवार और समाज के लगातार विरोधों का सामना करते हुए उसके मन में आदर्श और यथार्थ के आपसी टकराहट के कारण अंतर्द्वंद्व की स्थिति उत्पन्न होती है।

इसके अतिरिक्त प्रभा खेतान के उपन्यासों में स्त्री-पुरुष संबंधों में भी अंतर्द्वंद्व की स्थिति देखने को मिलती है। उन्होंने दर्शाया है कि कैसे वह अपने पति का अन्य स्त्रियों के साथ संबंध सहन नहीं कर पाती, इससे उसके मन में तीव्र अंतर्द्वंद्व उत्पन्न होता है कि पति को छोड़ दे कि साथ रहे। अपने उपन्यासों में उन्होंने आधुनिक युग में अकेली स्त्री और दूसरी स्त्री की भूमिकाओं में नारी की पीड़ा, अंतर्द्वंद्व और आत्ममंथन को दर्शाया है। 'अपने अपने चेहरे' उपन्यास की रमा के मन में अपने और मिस्टर गोयनका के सम्बन्ध को लेकर अंतर्द्वंद्व की स्थिति उत्पन्न होती है। वह अपने जीवन की भूलों का अहसास करती है– "यह कैसी जिंदगी मैं जी रही हूँ? मेरा परिचय क्या है? मैं छोड़ क्यों नहीं देती? मैं न विधवा, न सधवा? किस घर की बहू? किसकी माँ, किसकी पत्नी? अपनी ही आत्म तस्वीर इतनी धुंधली क्यों लगती है?" 5

## निष्कर्ष

इस प्रकार एक मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार के रूप में प्रभा खेतान ने अपने उपन्यासों में स्त्री की कुंठाओं, मानसिक रुग्णता, विकृतियों एवं दुर्बलताओं का अंकन किया है। आधुनिक काल की यांत्रिक निरसता, घुटन, एकाकीपन आदि का मार्मिक चित्रण करते हुए उन्होंने व्यक्ति के आत्मसंघर्ष तथा व्यक्ति और परिवेश के संघर्ष का चित्रण किया है। उन्होंने मानव मन के अंतर्द्वंद्वों को बड़ी ही सूक्ष्मता से अध्ययन करते हुए समकालीन साहित्यिक जीवन के परिप्रेक्ष्य में नारी-जीवन की सबलताओं, दुर्बलताओं, एवं प्रबलताओं से हमें साक्षात्कार कराया है। उनके उपन्यासों की सबसे बडी विशेषता यह है कि इन्होंने अपने उपन्यासों द्वारा स्त्री जीवन का मनोवैज्ञानिक चित्रण ही नहीं किया बल्कि उन्हें इन मानसिक क्रियाओं से निकलते हुए भी दर्शाया है।

## संदर्भ सूची


1. स्त्री चिंतन की चुनौतियाँ, रेखा कस्तवार, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि, नई दिल्ली, चौथा संस्करण 2016, पृ॰ 384.
2. The New Encyclopaedea of Britannica, vol-9, Page No.764.
3. The Oxford English Dictionary, J.A. Simpson, Oxford University press, New york, 1989, Page No.1552.
4. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन प्रा॰ लि॰, नई दिल्ली, संस्करण 1993, पृ. 45.
5. अपने अपने चेहरे, प्रभा खेतान, किताब घर, नई दिल्ली, संस्करण 1996, पृ. 47.